Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ram Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 10/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -
Major Changes of DSM-5

DSM में 5 प्रमुख संशोधन हुए हैं जिनका सामूहिक लक्ष्य नैदानिक निदान की दक्षता तथा सटीकता में सुधार करना है। मानसिक तथा व्यवहारिक विकारों की देखभाल के लिए निम्नलिखित संशोधन किए गए हैं-

(**1)** विकासात्मक ध्यान **(Developmental Focus)** DSM-5 विकारों को उस आयु के अनुसार वर्गीकृत करता है जिस पर उनके प्रकट होने की सबसे अधिक संभावना होती है. प्रारम्भ उन विकारों से होता है जो विशेष रूप से बचपन में प्रकट होते हैं तथा फिर उन विकारों से होते हैं जो सामान्य रूप से बुढ़ापे में दिखाई देते हैं। आयु के आधार पर बीमारियों होने के विभिन्न प्रकारों को उन स्थितियों के विवरण में शामिल किया गया हैं।

(2) नया निदान मानदंड **(New Diagnostic Criteria**)-नयी विकारों तथा मनोविदलता उपप्रकारों को हटाने के साथ-साथ कुछ बीमारियों के मानदंड बदल जाएंगे।

3) आयामी उपाय **(Dimensional Measures**)-DSM-5 विकारों के समान आयामों को निर्धारित करने में चिकित्सकों की सहायता के लिए एक विकार की गंभीरता के उपाय प्रदान करता है। इन उपायों का उद्देश्य रोगी को उनके लक्षणों के स्पेक्ट्रम की अधिक गहन समझ देकर कई निदानों में सहायता करना है।

(4) संस्कृत्ति तथा लिंग पर जोर देना **(Culture and Gender Emphasis**)-DSM-5 का नया भाग सांस्कृतिक संलक्षण का वर्णन करता है, जिसमें संभावित कारण, लक्षण तथा अभिव्यक्ति के प्रकार शामिल हैं, क्योंकि कई सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारक निदान को प्रभावित कर सकते हैं।

(5) अतिरिक्त अनुसंधान **(Further Research**)-DSM में अब एक वर्ग है जो उन बीमारियों को सूचीबद्ध करता है जिनके लिए अतिरिक्त अनुसंधान की आवश्यकता होती है। चल रहे अनुसंधान के निष्कर्षों के आधार पर, इन शर्तों को DSM के भविष्य के संस्करणों में जोड़ा जा सकता है या नहीं भी किया जा सकता है। उनके पास वर्तमान में ICD कोड नहीं हैं जिनका उपयोग डॉक्टर रोगियों का निदान करने तथा बीमा कंपनियों द्वारा भुगतान प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं।

नया और अद्यतन निदान **(New and Updated Diagnoses)** कई मानसिक विकारों के लिए**, DSM-5** वर्गीकरण में संशोधन और परिवर्द्धन शामिल हैं। कुछ वर्गों को एकीकृत किया गया है जबकि अन्य को चिकित्सकों और शोधकर्ताओं द्वारा समाप्त कर दिया गया है। **DSM-5** में निम्नलिखित **17** नई या संशोधित मानसिक बीमारियाँ शामिल हैं**-**

(1) सामाजिक संचार विकार (Social Communication Disorder)- यह चिकित्सकों को भाषण और भाषा की समस्याओं का निदान करने की अनुमति देता है जो स्वलीनता या खराब संज्ञानात्मक कार्य के संकेत के अंतर्गत नहीं आते हैं।

(2) विघटनकारी मनोदशा अनियंत्रण विकार (Disruptive Mood Dysregulation Disorder)-यह निदान 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए बचपन के द्विध्रुवी विकार को बाहर करता है जो अत्यधिक क्रोध और आवर्तक प्रकोप प्रदर्शित करते हैं।

(3) प्रागार्तव उत्साहवैकल्य विकार (Premenstrual Dysphoric Disorder)- यह संकलन अत्यधिक विवादित संयोजन है जो 5% रजोनिवृत्तिपूर्व महिलाओं को प्रभावित करता है।

(4) संचयी विकार (Hoarding Disorder) - यह बीमारी, जिसे कई TV कार्यक्रमों में दिखाया गया है, अब OCD की श्रेणी में एक स्वीकृत निदान है।

(5) कैफीन निकासी (Caffeine Withdrawal) कैफीन निकासी के इस असहमत सकलन को DSM-IV परिशिष्ट से DSM-5 में 'कैफीन सम्बन्धित विकार खंड में स्थानांतरित किया गया था।

(6) भांग निकासी (Cannabis Withdrawal)- इस संकलन को अब "पदार्थ सम्बन्धित और व्यसनी विकार के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है, जो अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भांग का अधिक उत्पाद कानूनी हो गया हैं।

(7) उत्तोलन विकार (Excoriation Disorder) यह निदान "जुनूनी बाध्यकारी और सम्बन्धित विकार की श्रेणी में आता है और लगातार त्वचा को नोंचने और खरोंचने से सम्बन्धित है।

(8) बिंज ईटिंग विकार (Binge Eating Disorder) एक बार अभ्यास किया गया कि यह संकलन अब एक रोगी के लिए सप्ताह में दो बार अभ्यास करने के बजाय इस निदान को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

(9) शीघ्र नेत्र गतिविधि निद्रा प्रवृत्ति विकार (Rapid Eye Movement Sleep Behaviour Disorder) यह बीमारी, जिसे पहले DSM में पैरासोमनिया समूह के तहत वर्गीकृत किया गया था, रोगियों को संभावित रूप से हानिकारक तरीकों से अपने सपनों को पूरा करने का कारण बनता है।

(10) रेस्टलेस लेग सिंड्रोम (Restless Leg Syndrome)- यह संकलन, जिसे कभी अनिद्रा के एक प्रकार के रूप में वर्गीकृत किया गया था, अब पूरी तरह से DSM के तहत अलग निदान के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

(11) लेवी बॉडी रोग के साथ मेजर न्यूरोकॉग्निटिव विकार (Major Neurocognitive Disorder with Lewy Body Disease)- यह वर्गीकरण गंभीर और हल्के न्यूरोकॉग्निटिव समस्याओं के बीच अंतर करता है, जिससे अधिक लक्षित थेरेपी सक्षम होती है।

(12) असंयमित सामाजिक जुड़ाव विकार (Disinhibited Social Engagement Disorder)- यह निदान पहले प्रतिघाती संलगनी विकार से सम्बन्धित था, लेकिन अब इसे एक अलग श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि इससे पीड़ित बच्चों में हमेशा लगाव की कमी नहीं हो सकती है।

(13) अतिरिक्त सेवन सम्बन्धी विकार (Additional Eating Disorders)- यह DSM का सबसे नया संकलन है जो बिंजईटिंग विकार के अलावा परिहार / प्रतिबंधात्मक सेवन विकृति, अफवाह और विकार को पहचानता है।

(14) जेंडर डिसफोरिया (Gender Dysphoria)- जेंडर डिस्फोरिया एक ऐसा शब्द है जो किसी व्यक्ति में होने वाली बेचैनी की भावना का वर्णन करता है, जो उसके जैविक लिंग एवं उसकी लिंग पहचान के बीच बेमेल के कारण हो सकती है। बेचैनी या असंतोष की यह भावना इतनी तीव्र हो सकती है कि यह अवसाद व चिंता का कारण बन सकती है तथा इसका दैनिक जीवन पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। इस निदान को जेंडर डिस्फोरिया से पीड़ित लोगों को उनकी आवश्यकतानुसार स्वास्थ्य सेवा और उपचार तक पहुँच दिलाने में सहायता करने के लिए बनाया गया था। जेंडर डिस्फोरिया का निदान समस्या के रूप में परेशानी की भावना पर केंद्रित है, न कि लिंग पहचान पर।

(15) विशिष्ट शिक्षण विकार (Specific Learning Disorder)- यह निदान अब एक एकल, विशिष्ट श्रेणी है। इसमें डिस्लेक्सिया जैसी अधिक विशिष्ट प्रकार की सीखने की समस्याओं को दर्शाने के लिए कई विनिर्देशक शामिल हैं. जिनका पढ़ने, लिखने या गणित पर प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, यह IQ-उपलब्धि विसंगति की आवश्यकता के विकल्प के रूप में विशेषता-आधारित मानदंड लागू करता है

(16) गैम्बलिंग विकार (Gambling Disorder)- यह विकार अब एक मान्यता प्राप्त विकार है: यह नशे की लत विकारों पर अध्याय में सूचीबद्ध है। इस पर एक खंड होने के बावजूद, DSM-IV में पैथोलॉजिकल गैम्बलिंग को एक स्थापित व्यसनी विकार के रूप में मान्यता नहीं दी गई थी।

(17) दैहिक लक्षण विकार (Somatic Symptom Disorder) - यह विकार DSM-5 में पूर्व सोमैटोफॉर्म विकारों की जगह लेता है, जिसमें सोमैटिसेशन विकार, रोगभ्रम, दर्द विकार और अविभाजित सोमैटोफॉर्म विकार शामिल हैं। समान बीमारियों और ओवरलैप को कम करने वाली बीमारियों के बीच अंतर करना आसान बनाने के लिए, यह विकार मानदंड में महत्त्वपूर्ण संशोधन करता है।